RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th GEOGRAPHY

ARJUN BATCH

मानव भूगोल

प्राथमिक क्रियाएँ

अध्याय-4 | भाग-01

14 अगस्त 2026 || 05:00 PM

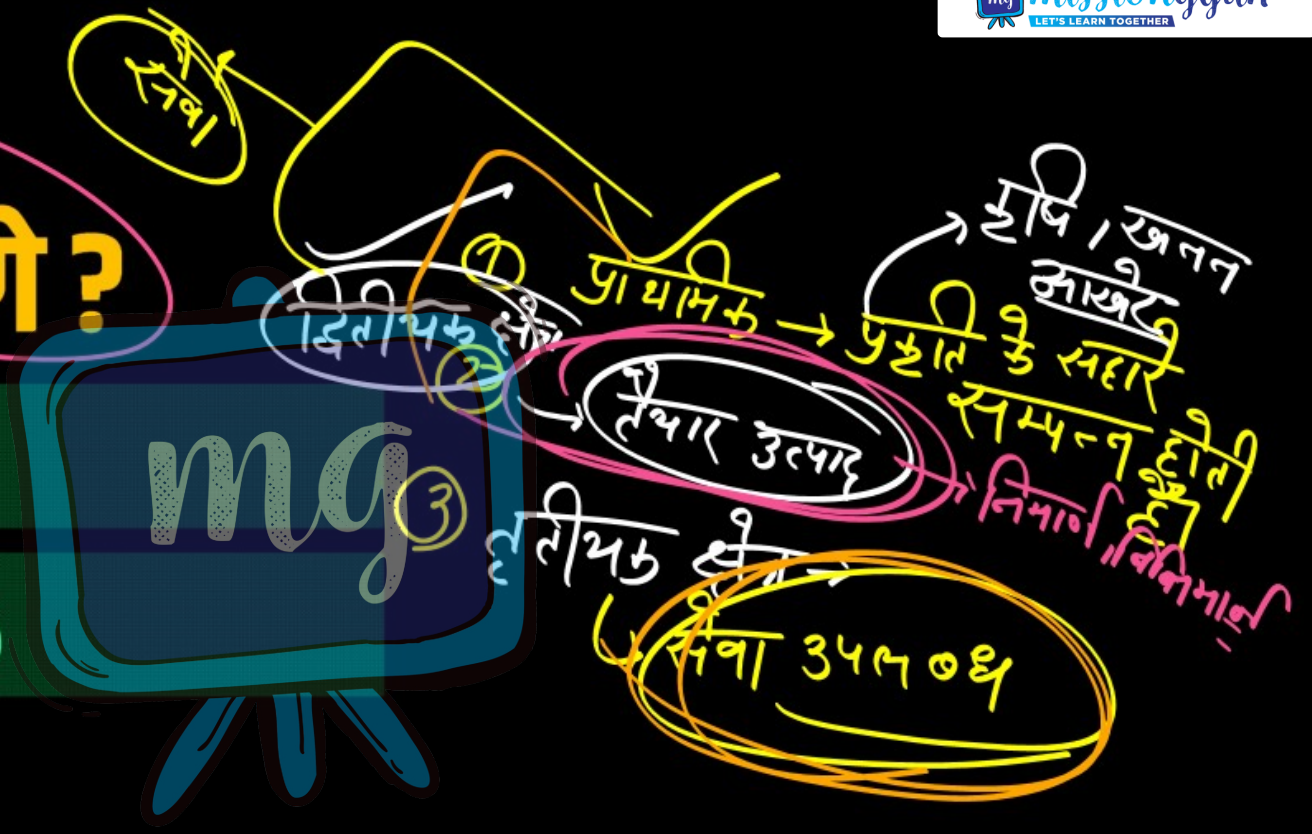


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढ़ेंगे ?

1. प्राथमिक क्रियाएँ
2. आखेट व पशुचारण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्राथमिक क्रियाएँ

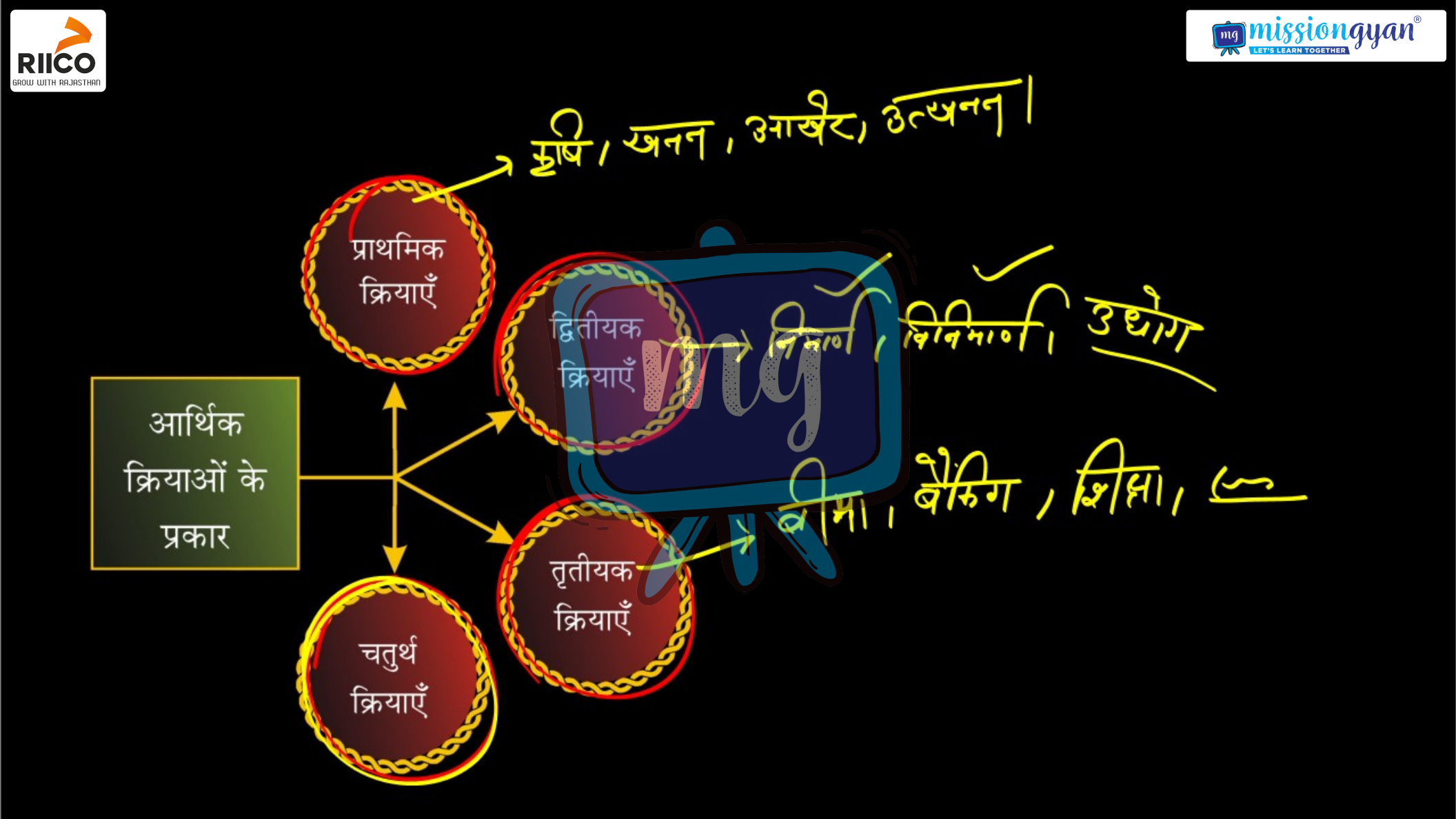
आर्थिक क्रिया

- मानव के वो क्रियाकलाप जिनसे आय प्राप्त होती है, उन्हें आर्थिक क्रिया कहा जाता है।



क्रिया कलाप

आय प्राप्त


आर्थिक क्रियाओं के प्रकार
प्राथमिक क्रियाएँ
कृषि, खनन, आखेट, उत्खनन।
द्वितीयक क्रियाएँ
निर्माण, विनिर्माण। उद्योग
तृतीयक क्रियाएँ
बीमा, बैंकिंग, शिक्षा, ...
चतुर्थ क्रियाएँ


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

रेड कॉलर

प्राथमिक क्रियाएँ

मुख्य - 3
वर्तमान 5

- प्राथमिक क्रियाएँ प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण (उद्योग) पर निर्भर है, क्योंकि ये पृथ्वी के संसाधनों जैसे – भूमि, जल, वनस्पति, भवन निर्माण सामग्री एवं खनिजों के उपयोग के विषय में बतलाती हैं।
- प्राथमिक कार्यकलाप करने वाले लोग उनका कार्य क्षेत्र घर से बाहर होने के कारण लाल कॉलर श्रमिक कहलाते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख प्राथमिक क्रियाएँ

- आखेट (शिकार)
- पशुचारण
- कृषि
- खनन
- वनों से लकडी काटना
- भोजन संग्रह
- मछली पकड़ना



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आखेट एवं भोजन संग्रह

मानव सभ्यता के आरंभिक युग में आदिमकालीन मानव अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने समीप के वातावरण पर निर्भर रहता था।





पर्यावरण पर निर्भर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जीवन-निर्वाह के कार्य

(क) पशुओं का आखेट करना और

(ख) अपने समीप के जंगलों से खाने योग्य जंगली पौधे एवं कंद-मूल आदि को एकत्रित करना।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आखेट एवं भोजन संग्रह की विशेषताएँ

- भोजन संग्रह एवं आखेट प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं।
- अतिशीत एवं अत्यधिक गर्म प्रदेशों के रहने वाले लोग आखेट द्वारा जीवन-यापन करते थे।
- ये लोग अपने भोजन, वस्त्र एवं शरण की आवश्यकता की पूर्ति हेतु पशुओं एवं वनस्पति का संग्रह करते हैं। इस कार्य के लिए बहुत कम पूँजी एवं निम्न स्तरीय तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

mg

प्राचीनतम आर्थिक क्रिया कौनसी है?
आखेट व भोजन संग्रहण

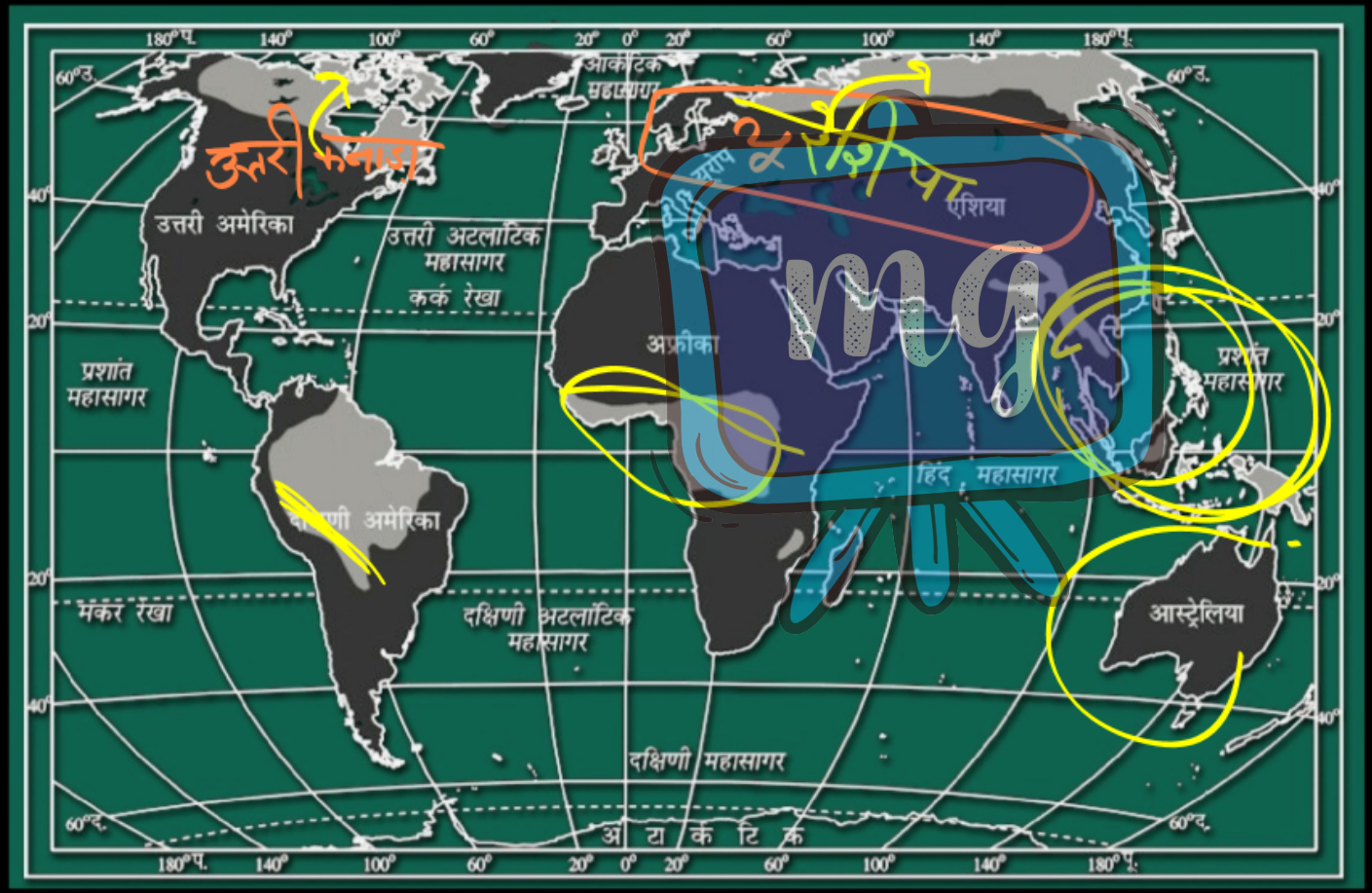
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

विश्व के भोजन संग्रह क्षेत्र

(i) उच्च अक्षांश के क्षेत्र- उत्तरी कनाडा, उत्तरी यूरेशिया एवं दक्षिणी चिली।

(ii) निम्न अक्षांश के क्षेत्र- अमेजन बेसिन, (भारत) उष्णकटिबंधीय अफ्रीका, आस्ट्रेलिया एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया का आंतरिक प्रदेश।


उत्तरी अमेरिका
उत्तरी अटलांटिक महासागर
कर्क रेखा
प्रशांत महासागर
दक्षिणी अमेरिका
मकर रेखा
दक्षिणी अटलांटिक महासागर
दक्षिणी महासागर
अंटार्कटिक
आर्कटिक महासागर
यूरेशिया
एशिया
अफ्रीका
हिंद महासागर
प्रशांत महासागर
आस्ट्रेलिया
60° उ.
60° द.
180° प.
140°
100°
60°
20°
0°
20°
40°

- आधुनिक समय में भोजन संग्रह के कार्य का कुछ भागों में व्यापारीकरण भी हो गया है।
- उदाहरण-

छाल का उपयोग - कुनैन, चमड़ा एवं कार्क।

पत्तियों का उपयोग- पेय पदार्थ, दवाइयाँ एवं कांतिवर्द्धक वस्तुएँ ।

रेशे का उपयोग - कपड़ा बनाना।

तने का उपयोग- रबड़, गोंद व राल बनाना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पशुचारण

- भौगोलिक कारकों एवं तकनीकी विकास के आधार पर वर्तमान समय में पशुपालन व्यवसाय निर्वहन अथवा व्यापारिक स्तर पर किया जाता है।

पशुचारण के प्रकार

1. चलवासी पशुचारण → पशुओं को केवल जीवन निर्वाह के लिए पशुपालन।
2. वाणिज्य पशुधन पालन → उनका उद्देश्य लाभ कमाने के लिए किया जाता है।

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चलवासी पशुचारण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह व्यवसाय रहा है जिसमें पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, शरण, औजार एवं यातायात के लिए पशुओं पर ही निर्भर रहता था।
- वे अपने पालतू पशुओं के साथ पानी एवं चरागाह की उपलब्धता एवं गुणवत्ता के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते थे। इन पशुचारक वर्गों के अपने-अपने निश्चित चरागाह क्षेत्र होते थे।

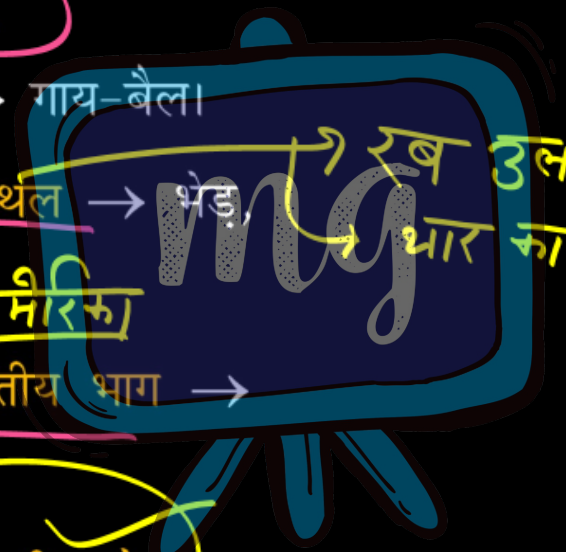

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख पशु

- उष्णकटिबंधीय अफ्रीका → गाय-बैल।
- सहारा एवं एशिया के मरुस्थल → भेड़, बकरी एवं ऊँट।
- तिब्बत एवं एंडीज के पर्वतीय भाग → याॅक व लामा।
- आर्कटिक और उप उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र → रेंडियर।

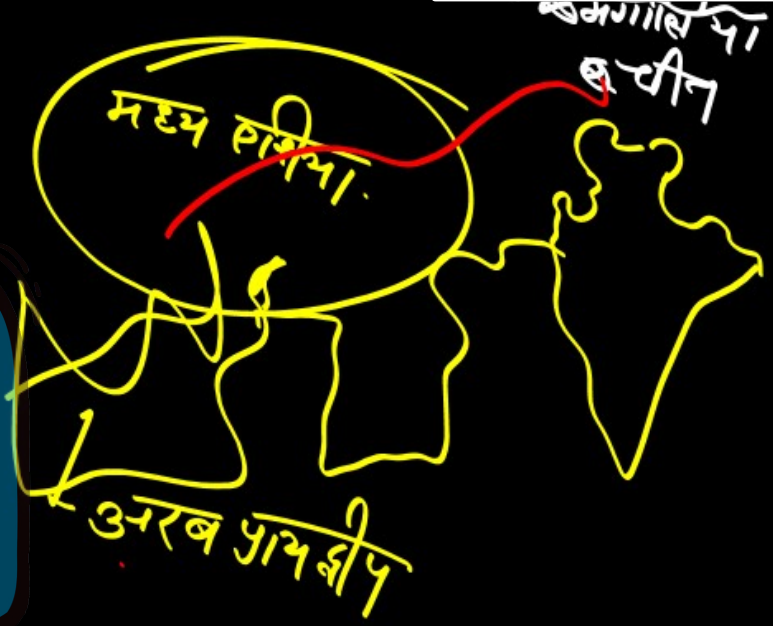


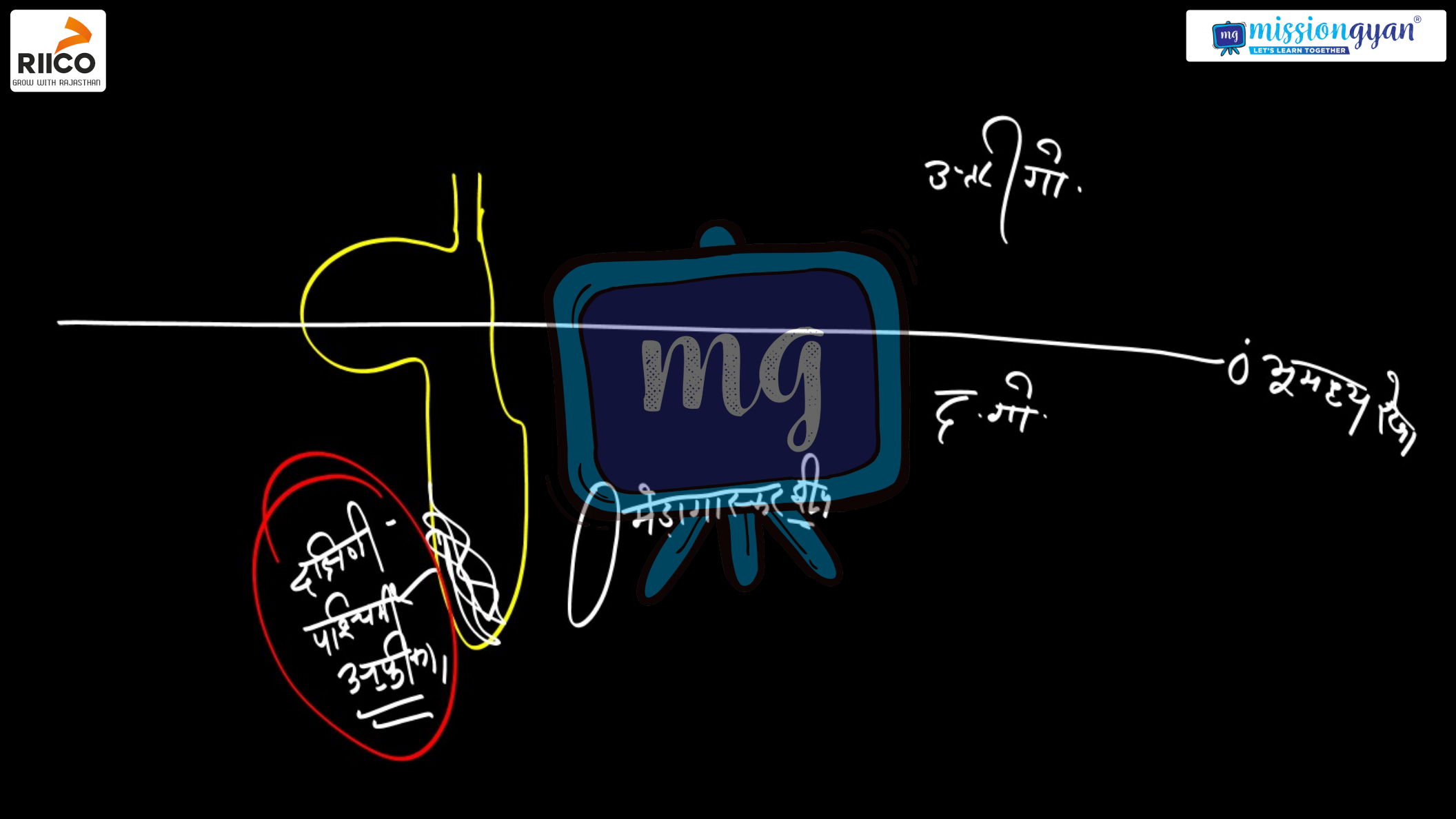
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

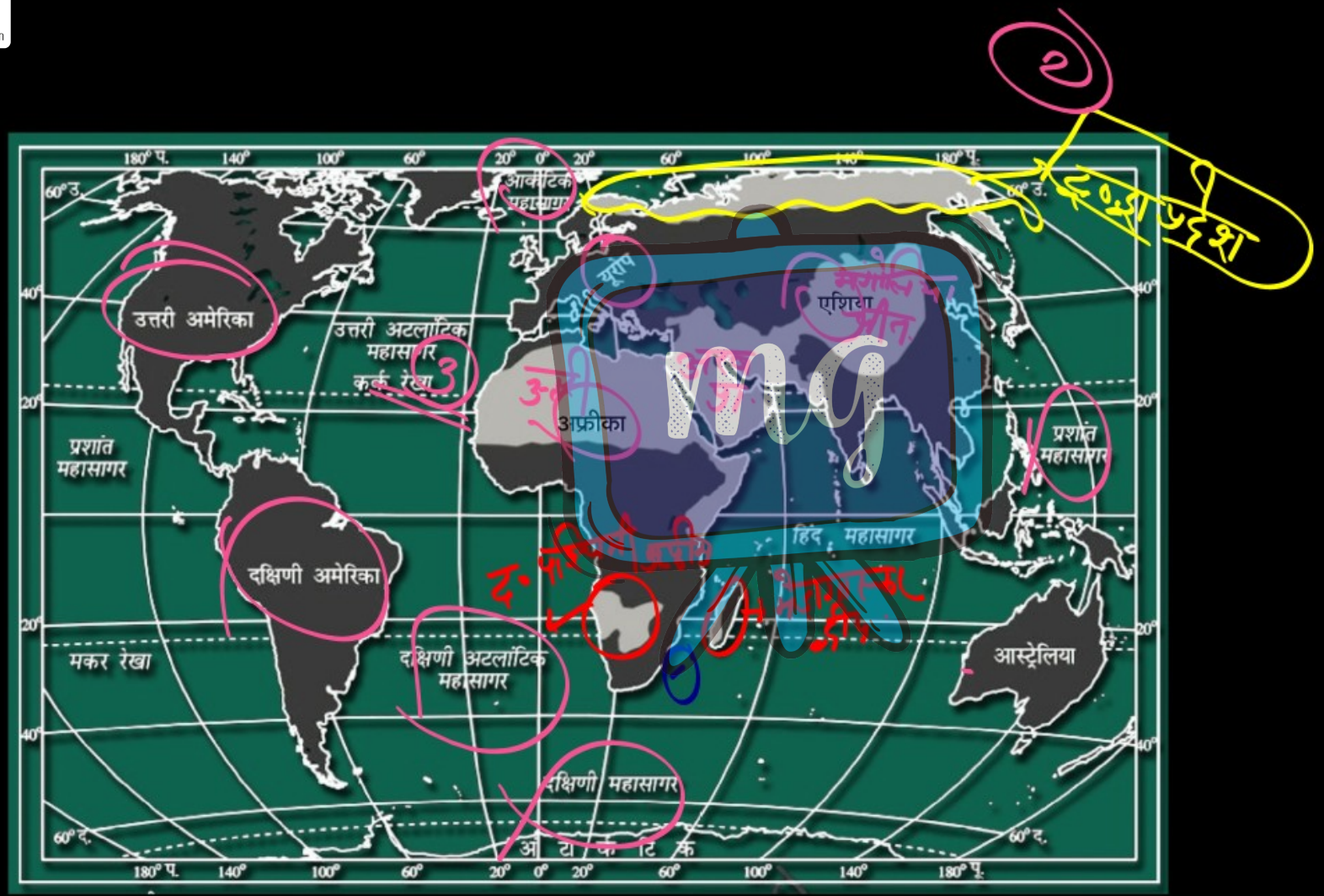
चलवासी पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र

- उत्तरी अफ्रीका के एटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप होता हुआ मंगोलिया एवं मध्य चीन तक।
- दूसरा क्षेत्र यूरोप तथा एशिया के टुंड्रा प्रदेश।
- तीसरा क्षेत्र दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका एवं मेडागास्कर द्वीप।




उ. ध्रु. गो.
0° मध्य रेखा
द. ध्रु. गो.
दक्षिणी - पश्चिमी अफ्रीका


उत्तरी भाग
ठण्डा प्रदेश
यूरोप
एशिया
यूरोप
एशिया

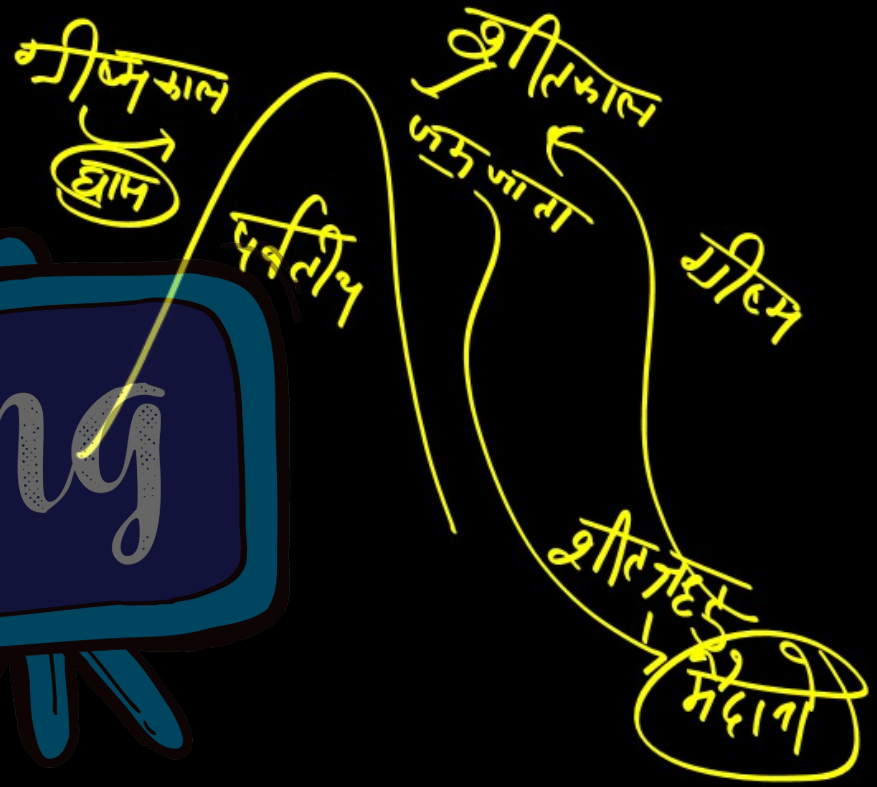

180° प.
140°
100°
60°
20°
0°
20°
60°
100°
140°
180° पू.
60° उ.
40°
20°
उत्तरी अमेरिका
आर्कटिक महासागर
उत्तरी अटलांटिक महासागर
कर्क रेखा
यूरोप
एशिया
अफ्रीका
प्रशांत महासागर
प्रशांत महासागर
हिंद महासागर
दक्षिणी अमेरिका
मकर रेखा
दक्षिणी अटलांटिक महासागर
आस्ट्रेलिया
दक्षिणी महासागर
अंटार्कटिक
60° द.

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख विशेषताएँ

- नए चरागाहों की खोज में ये पशुचारक समतल भागों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में लंबी दूरियाँ तय करते है।
- गर्मियों में मैदानी भाग से पर्वतीय चरागाह की ओर एवं शीत में पर्वतीय भाग से मैदानी चरागाहों की ओर प्रवास करते हैं।
- इनकी इस गतिविधि को ऋतुप्रवास कहा जाता है।



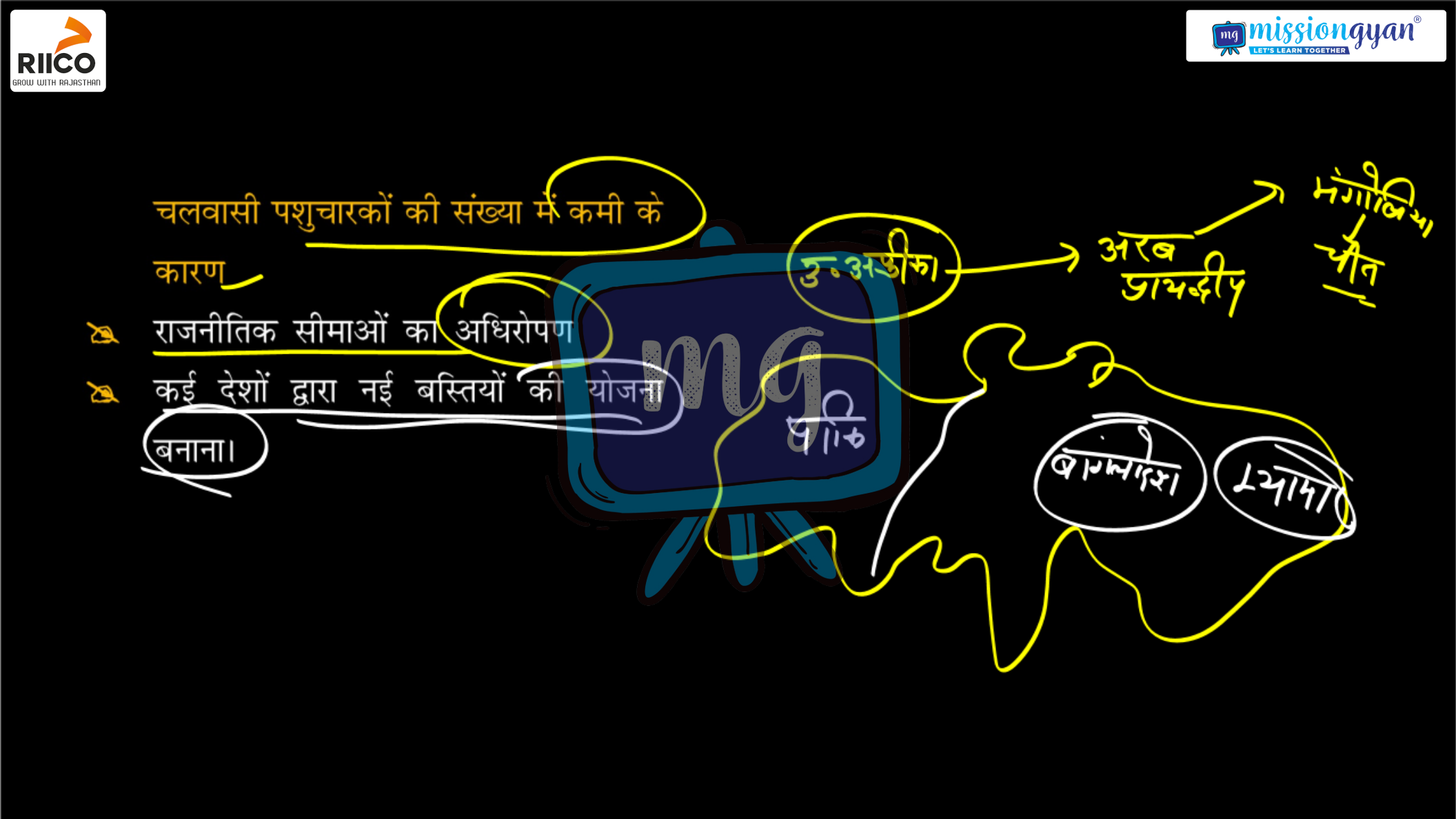
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- भारत में हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में गुज्जर, बकरवाल, गद्दी एवं भूटिया लोगों के समूह ग्रीष्मकाल में मैदानी क्षेत्रों से पर्वतीय क्षेत्रों में चले जाते हैं एवं शीतकाल में पर्वतीय क्षेत्रों से मैदानी क्षेत्र में आ जाते हैं।
- इसी प्रकार टुंड्रा प्रदेश में ग्रीष्म काल में दक्षिण से उत्तर की ओर एवं शीत में उत्तर से दक्षिण की ओर चलवासी पशुचारकों का पशुओं के साथ प्रवास होता है।

चलवासी पशुचारकों की संख्या में कमी के कारण

- राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण
- कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाना।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वाणिज्य पशुधन पालन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उद्देश्य → पशु उत्पाद

वाणिज्य पशुधन पालन की विशेषताएँ

- चलवासी पशुचारण की अपेक्षा वाणिज्य पशुधन पालन अधिक व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान है।
- वाणिज्य पशुधन पालन पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है एवं फार्म भी स्थायी होते है।
- चराई को नियंत्रित करने के लिए इन्हें बाड़ लगाकर एक दूसरे से अलग कर दिया जाता है।

चलवासी पशुपालक
→ उद्देश्य → जीवन निर्वाह करना।
भोजन, वस्त्र, मनुष्य आवास

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यह एक विशिष्ट गतिविधि है, जिसमें केवल एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं।
- प्रमुख पशुओं में भेड़, बकरी, गाय-बैल एवं घोड़े हैं।
- इनसे प्राप्त मांस, खालें एवं ऊन को वैज्ञानिक ढंग से संसाधित एवं डिब्बा बंद कर विश्व के बाजारों में निर्यात कर दिया जाता है।
- पशुफार्म में पशुधन पालन वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित किया जाता है।

→ गाय फार्म, भैंस फार्म, बकरी फार्म

① पूँजी ② तकनीकी ③ व्यवस्थित।
④ स्थायी रूप
⑤ एक ही प्रकार के पशुपालन।


mg

- इसमें मुख्य ध्यान पशुओं के प्रजनन, जननिक सुधार, बीमारियों पर नियंत्रण एवं उनके स्वास्थ्य पर दिया जाता है।

